डॉ० कविता कुमारी सिंह
हिन्दी - विभाग
आर० एन० कॉलेज

वर्ग XII

'बातचीत' पाठ का सारांश —

बालकृष्ण भट्ट बातचीत निबन्ध के माध्यम से मनुष्य को ईश्वर द्वारा दी गई अनमोल वस्तु वाक्शक्ति का सही प्रयोग करने की प्रेरणा देते हैं। वे बताते हैं कि यदि वाक्शक्ति मनुष्य में न होती तो हम नहीं जानते कि इस गूँगी सृष्टि का क्या हाल होता है। सबलोग लुंज-मुंज से एक कोने में बैठा दिये गये होते। वे बातचीत के विभिन्न तरीके भी बताते हैं, यथा- घरेलू बातचीत मन रमाने का ढंग है। वे बातचीत

का महत्व बताते हैं कि जैसे आदमी को अपनी जिन्दगी मजेदार बनाने के लिए खाने-पीने, चलने-फिरने आदि की जरूरत है, बातचीत की भी अत्यन्त आवश्यकता है। जो कुछ मवाद या धुँआ हृदय में जमा रहता है, वह बातचीत के माध्यम से भाप बनकर निकल पड़ता है। उससे हल्का और स्वच्छ हो परम आनन्द में मगन हो जाता है।

मनुष्य जबतक बोलता नहीं तबतक उसका गुण-दोष नहीं प्रकट होता है। 'बेन जानसन' का कहना है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार हो जाता है। यूरोप के लोगों में बातचीत का हुनर है जिसे आर्ट ऑफ कनवरसेशन कहते हैं। इस प्रसंग में ऐसे चतुराई के प्रसंग छोड़े जाते हैं कि उन्हें सुनकर अत्यन्त

सुख मिलता है। हिन्दी में इसका नाम सुहृद गोष्ठी है।
मानते हैं कि हम वह शक्ति पैदा करें कि अपने आप
बात कर लिया करें। बातचीत में भाव अर्थपूर्ण रूप से
स्पष्ट होना चाहिए। बातचीत के संबंध में 'बेन जॉनसन'
का मत है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार
होता है। यह बहुत ही उचित जान पड़ता है।
'एडीसन' का मत है कि असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों
में हो सकती है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि जब दो
आदमी होते हैं, तभी अपना दिल एक-दूसरे के सामने
खोलते हैं। जब तीन हुए तब वह दो बात कोसों दूर गयी।
कहा जाता भी है कि चार कानों में पड़ी बात खुल जाती है।
जैसे गरम दूध और ठंडे पानी के दो
बर्तन पास-पास सटाकर रखने पर एक का असर

दूसरे में पहुँच जाता है अर्थात दूध ठण्डा
हो जाता है और पानी गरम। वैसे ही दो आदमी आप
में पास बैठे हों एक का गुप्त असर दूसरे पर पहुँच
जाता है। हमारी भीतरी मनोवृत्ति जो प्रतिक्षण नये-न
रंग दिखलाया करती है जो बाह्य प्रपंचात्मक संसार क
एक बड़ा भारी आईना है जिसमें जैसी चाहें वैसी
सूरत देख लेना कुछ दुर्धर बात नहीं है और जो
एक चमनिस्तान है, जिसमें हर किस्म के बेल-बूटे
हुए हैं। इस चमनिस्तान की सैर क्या कम है?
मित्रों का वार्तालाप कभी इसकी 16 वीं कला तक
सकता है। इसी सैर का नाम ध्यान या मनोयो
या चित्त का एकाग्र करना है, जिसका साध्य

एक दो दिन का काम नहीं, वरन् साल दो साल
अभ्यास के उपरान्त यदि हम थोड़ी सी अपनी मनो
स्थित कर अवाक् हों, अपने मन के साथ बात
कर सकें तो मानो अति मान्य है। एक वाक् शक्ति
दमन से न जाने कितने प्रपंच का दमन हो
हमारी जिह्वा तो कतरनी के समान सदा स्वच्छन्द
करती है, उसे यदि हमने दबाकर अपने काबू में
लिया तो क्रोधादिक बड़े-बड़े अजेय शत्रु को
बिना प्रयास जीत अपने वश में कर डाला। इस
अवाक् रह अपने आप बातचीत करने का यह
यावत् साधन का मूल है, शांति का परम पूज्य
, परमार्थ का एकमात्र सोपान है।